प्रकाशन तिथि : 01 मार्च, 2024
प्रेषण तिथि : 04 मार्च, 2024

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 24 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

समाज हित में त्याग का पाठ पढ़ा रहा है श्री क्षत्रिय युवक संघः संघप्रमुख श्री

जब हम अपने व्यक्तिगत हित से आगे बढ़कर सामाजिक हित के प्रति चिंतन करने लगते हैं तब वहां से श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिक्षण प्रारंभ होता है। क्षत्रिय होने का अर्थ स्वयं के लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए जीवन जीना होता है। क्षत्रिय के इस अर्थ को हम सभी जानते हैं लेकिन इस अर्थ को जानना अलग बात है और उसके अनुसार जीवन जीना अलग बात है। उस अर्थ के अनुसार जीने का तरीका ही श्री क्षत्रिय युवक संघ है। हमारे पूर्वजों का जीवन हम देखें चाहे राम का हो या कृष्ण का हो या दुगार्दास, महाराणा प्रताप, मुखड़ो जी गोहिल और अन्य महापुरुषों का हो, उन्होंने कभी भी अपने व्यक्तिगत हित के लिए जीवन नहीं जीया। उन्होंने दूसरों के लिए त्याग पूर्ण जीवन जीया और इसीलिए हम उन्हें आज भी याद करते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी हमें उसी त्याग का पाठ पढ़ा रहा है। संघ के मार्ग पर चलने के लिए त्याग को अपनाना ही पड़ेगा। घर के मोह का त्याग करना पड़ेगा, समय का त्याग करना पड़ेगा, अपनी इच्छाओं का त्याग करना पड़ेगा, तभी हम संघ का काम कर सकेंगे। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने अपने गुजरात प्रवास के दौरान काणेटी गांव में 24 फरवरी को आयोजित स्नेहमिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। (शेष पृष्ठ 7 पर)

पिस्तौलधारी डकैतों से निहत्थे भिड़े नरेंद्र सिंह

झुंझुनूं जिले के खिरोड़ गांव के निवासी नरेंद्र सिंह शेखावत ने अदम्य साहस और वीरता का परिचय देते हुए बैंक लूटने आए सशस्त्र लुटेरों से निहत्थे ही भिड़ गए और तीन गोलियां लगने के बावजूद संघर्षरत रहते हुए डकैती को विफल कर दिया। जयपुर के झोटवाड़ा क्षेत्र में स्थित पंजाब नेशनल बैंक की जोशी मार्ग शाखा में 23 फरवरी को घटी इस घटना में उनकी बहादुरी के कारण एक लुटेरा मौके पर ही पकड़ लिया गया और दूसरे अपराधी को भी कुछ ही समय बाद पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया। इसी बैंक में कैशियर के पद पर कार्यरत नरेंद्र सिंह शेखावत जब बैंक पहुंचे तब बैंक के दरवाजे पर खड़े डकैत ने उन्हें रोका। संदेह होने पर उन्होंने डकैत से संघर्ष करते हुए उसे दबोच लिया। बैंक के भीतर खड़े दूसरे अपराधी ने अपने साथी को छुड़ाने का प्रयत्न किया तो उन्होंने उसे भी पकड़ लिया। इस पर अपराधियों ने बचने के लिए उन पर गोलियां चलाई जिनमें से तीन गोलियां उन्हें लगी। (शेष पृष्ठ 7 पर)

गिलहरी की भांति समर्पण भाव से करें समाज का कार्यः सरवड़ी

(श्री क्षत्रिय प्रतिभा विकास एवं शोध संस्थान अजमेर का 23वां क्षत्रिय प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न)

हम जब बात करते हैं हमारी विरासत की, हमारे गौरवशाली इतिहास की, संस्कृति की तो थोड़ा सा हमें अपने वर्तमान पर भी नजर डालनी चाहिए। हमारे समाज की वर्तमान स्थिति कैसी है और उस स्थिति में हम उस गौरवशाली स्थान की कल्पना कैसे कर सकते हैं, कैसे वहां तक पहुंच सकते हैं? अगर हम निष्क्रिय रहेंगे, कुछ करेंगे नहीं तो उस स्थिति तक नहीं पहुंच पाएंगे। इसलिए हमारा यह दायित्व बनता है कि उस स्थिति को प्राप्त करने के लिए मैं जो कुछ भी कर सकता हूं, वह करूं। हम कितना कर सकते हैं यह बात महत्व की नहीं है। यदि हम बहुत थोड़ा ही कर सकते हैं तो वही करना शुरू करें। भगवान राम जब लंका की तरफ बढ़ रहे थे और समुद्र को पार करने के लिए पुल बनाया जा रहा था तब वहां वानर सेना द्वारा बड़े-बड़े पत्थर लाकर रखे जा रहे थे। तब वहां उपस्थित एक गिलहरी का यह भाव जगा कि मैं भी प्रभु श्रीराम के लिए कुछ करूं। वह बड़े-बड़े पत्थर तो नहीं ला सकती थी इसलिए वह अपने शरीर को समुद्र के पानी में भिगोकर रेत में जाकर लोटने लगी। इस प्रकार उसके शरीर पर जो मिट्टी के कण चिपकते उन्हें ले जाकर वह पुल पर डालने लगी। हमें भी उस गिलहरी की तरह का भाव अपना कर समाज के लिए जो कुछ हम कर सकते हैं, वह करना प्रारंभ करना है। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने श्री क्षत्रिय प्रतिभा विकास एवं शोध संस्थान अजमेर के 23वें क्षत्रिय प्रतिभा सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हम सब केवल एक बात पकड़ लें कि राजपूत जाति हमारी मां है और हम सब इसकी संतान हैं। इसकी सेवा करने के लिए, समाज का काम करने के लिए अनेक क्षेत्र हो सकते हैं जैसे प्रतिभाओं का प्रोत्साहन करने का यह कार्यक्रम है, यह भी आवश्यक है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

बेंगलुरु में चामुण्डा माता मंदिर का पाटोत्सव संपन्न

कर्नाटक के बेंगलुरु में राजपूत समाज द्वारा चामुण्डा माता मंदिर की प्रतिष्ठा के 12 वर्ष पूर्ण होने पर पाटोत्सव समारोह 19 फरवरी को आयोजित हुआ जिसमें बेंगलुरु में रहने वाले सैकड़ों समाजबंधुओं और मातृशक्ति की उपस्थिति रही। कर्नाटक सरकार में स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुंडुराव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि 12 वर्ष पूर्व इसी मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में भी वे सम्मिलित हुए थे। उन्होंने कहा कि हमें आपसी विभेदों को भुलाकर प्रेम और भाईचारे के साथ रहना चाहिए और सामाजिक सौहार्द के निर्माण में सहयोग करना चाहिए। ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन आपसी अपनत्व को बढ़ाने में सहयोगी होते हैं। स्थानीय सांसद पीसी मोहन ने कहा कि वीरता और शौर्य में राजपूत समाज का कोई सानी नहीं है। देश की रक्षा में अपना बलिदान देने में राजपूत हमेशा से आगे रहे हैं। आज शिक्षा के क्षेत्र में भी समाज को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। राजस्थान कांग्रेस के महासचिव करण सिंह उचियारड़ा ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने धर्म और समाज की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है। उनसे प्रेरणा लेते हुए आज हमें भी सभी को साथ लेकर चलना होगा। आज के युग में सबके साथ मिलकर ही आगे बढ़ना संभव है। उन्होंने लोकतंत्र में मतदान का महत्त्व बताते हुए सभी से समाज हित में अधिकतम मतदान करने की बात भी कही। उन्होंने ईडब्ल्यूएस आरक्षण के सरलीकरण की भी मांग की। शिव विधायक रविंद्र सिंह भाटी ने अपने मेहनत व परिश्रम से आगे बढ़ने और वरिष्ठ जनों का सम्मान करने की बात कही। राजपूत करणी सेना के महिपाल सिंह मकराना, भाजपा नेता टीकम सिंह राणावत, पुलिस उपाधीक्षक देरावर सिंह सोढा, वरद सिंह परमार ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। मनोहर सिंह कुंपावत सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सूर सिंह चौहान ने किया। कार्यक्रम में विभिन्न प्रवासी समाजों के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

नाशिक में राजपूत भवन का भूमिपूजन

महाराष्ट्र के नाशिक में राजस्थान राजपूत समाज की ओर से समाजबंधुओं के लिए बनने वाले राजपूत भवन का भूमिपूजन समारोह 25 फरवरी को संपन्न हुआ। पोकरण विधायक प्रताप पुरी ने कहा कि यह भवन नाशिक आने वाले समाज के श्रद्धालुओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। संस्था द्वारा किया जाने वाला यह कार्य सराहनीय है। स्थानीय विधायक राहुल ढीकले, क्षत्रिय समाज फाऊंडेशन अध्यक्ष भगत सिंह राठौड़ सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर मौजूद रहे।

चेन्नई में वन्निया कुलीन क्षत्रियों का आध्यात्मिक सम्मेलन संपन्न

तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में मुरुगन टॉवर्स, रेडियल रोड पल्लवरम में वन्निया कुल के क्षत्रियों का प्रथम आध्यात्मिक सम्मेलन 27 फरवरी को संपन्न हुआ। 25 फरवरी को प्रारंभ यह तीन दिवसीय सम्मेलन जयराम मनी और निजालिंगम नायकर के सान्निध्य में आयोजित हुआ जिसमें देशभर से समाज के प्रबुद्ध जन, आध्यात्मिक संत व विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल हुए। सम्मेलन में धर्म, अध्यात्म, संस्कृति आदि विषयों पर चर्चा की गई और बताया गया कि समाज की रक्षा करना ही क्षत्रिय धर्म है, इसी से क्षत्रिय जाति की पहचान है। गाजियाबाद दूधेश्वर नाथ मंदिर के महंत नारायण गिरी, हरिद्वार के संत स्वामी विज्ञानानंद जी महाराज, अखंड राजपूताना सेवा संस्थान के के पी सिंह, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के महेंद्र सिंह तंवर, करणी सेना के महिपाल सिंह मकराना, कुंवर अवनीश सिंह सहित देश भर से अनेकों समाजबंधु सम्मेलन में उपस्थित रहे। नागेश जी एवं जगमोहन नायकर पेरीमलम द्वारा सभी का स्वागत किया गया। लोकेंद्र चौहान, राम सिंह, ए करुणाकरन, सी सुब्रह्मण्यम चेन्नई, हरी सिंह, गोपी कुमार सोजहन, कृपा करन, चेलया नायकर, पेरीमलम, नटराजन आदि की आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका रही। अतिथियों को कोयंबटूर स्थित आदि गुरु जग्गी जी महाराज के आश्रम में दर्शन भी कराये गए।

छोटी रानी में मनाया कान सिंह जी वैरावत राठौड़ का बलिदान दिवस

पाली जिले के छोटी रानी में वैरावत राठौड़ वंशीय राजपूत समाज रानी खुर्द के तत्वावधान में वीर शिरोमणि कान सिंह जी वैरावत राठौड़ का 456वां बलिदान दिवस 24 फरवरी को मनाया गया। संस्था के संरक्षक विशन सिंह राठौड़ व सेवानिवृत्त पुलिस निरीक्षक भंवर सिंह राठौड़ की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में सर्वप्रथम श्री चामुंडा माता जी की अर्चना की गई, तत्पश्चात उपस्थित समाजबंधुओं द्वारा वीर शिरोमणि कान सिंह जी को श्रद्धांजलि दी गई। संयोजक गोविन्द सिंह राठौड़ ने कान सिंह जी की शौर्य गाथा के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि वीर शिरोमणि कान सिंह जी वैरावत राठौड़ चित्तौड़ के तीसरे साके में अकबर की फौज से लोहा लेते हुए 24 फरवरी 1568 को वीरगति को प्राप्त हुए थे। नरपत सिंह राठौड़ व नाथु सिंह राठौड़ ने कान सिंह जी जैसे पूर्वजों के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। इस अवसर पर केसर सिंह, रतन सिंह, जय सिंह, जब्बर सिंह, छैल सिंह, भीक सिंह, पर्वत सिंह, जितेन्द्र सिंह, नारायण सिंह, यशपाल सिंह, धीरज कंवर सहित छोटी रानी के अनेकों निवासी उपस्थित रहे।

ध्रुव पठानिया की जीएसआई परीक्षा में 34वीं रैंक

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले के गसोता गांव के निवासी ध्रुव पठानिया पुत्र अनिल पठानिया ने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर 34वां स्थान प्राप्त किया है। वे वैज्ञानिक (वर्ग - अ) के पद पर नियुक्त होंगे। ध्रुव वर्तमान में आईआईटी रुड़की के भू विज्ञान विभाग से पीएचडी कर रहे हैं। वे स्विट्जरलैंड की ज्यूरिख यूनिवर्सिटी में इस वर्ष आयोजित सोसाइटी फॉर जियोलॉजी अप्लाइड टू मिनरल डिपॉजिट्स (एसजीए) के 17वें अधिवेशन में भी शोध पत्र की प्रस्तुति के लिए भारत की ओर से नामित हुए थे।

सिंधल राठौड़ राजपूत समाज की वार्षिक बैठक संपन्न

जालौर जिले के पांचोटा स्थित श्री नागणेची माता मंदिर में बसंत पंचमी के दिन सिंधल राठौड़ राजपूत समाज की वार्षिक बैठक आयोजित हुई। वाग सिंह पांचोटा ने बताया कि बैठक में विभिन्न सामाजिक कुरीतियों को रोकने के संबंध में चर्चा की गई और सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि विवाह समारोह में डीजे व बंदौली पर प्रतिबंध लगाया जाए, रात के समय प्रीतिभोज न रखा जाए और विवाह समारोह में शराब व मांस पर पूर्णतया प्रतिबंध लगाया जाए। सभी समाजबंधुओं ने इन निर्णयों का पालन करने का संकल्प व्यक्त किया। बैठक में मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अमर सिंह, माधो सिंह, ग्रेनाइट एसोसिएशन जालौर के पूर्व अध्यक्ष लाल सिंह धानपुर, सवाई सिंह, वने सिंह थुंबा, हुकम सिंह, मोती सिंह सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

लोहारू (हरियाणा) में महाराव शेखाजी की प्रतिमा का अनावरण

हरियाणा में भिवानी जिले के लोहारू में महाराव शेखा जी की अष्टधातु से निर्मित प्रतिमा का अनावरण 22 फरवरी को समारोह पूर्वक किया गया। राजस्थान विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष राव राजेंद्र सिंह ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि राव शेखा जी हम सभी के लिए आदर्श और प्रेरणास्रोत हैं जिन्होंने नारी जाति के सम्मान की रक्षा के लिए जीवन भर संघर्ष किया। ऐसे महापुरुषों के इतिहास से आने वाली पीढ़ी परिचित हो, इसके लिए हम सभी को प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि उनकी यह प्रतिमा युवाओं को स्वधर्म पालन की प्रेरणा देगी। इसके लिए आयोजनकर्त्ता धन्यवाद के पात्र हैं। सादुलपुर विधायक मनोज न्यांगली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि प्रायः हमारी यह शिकायत रहती है कि सरकारों द्वारा हमारी बात सुनी नहीं जाती लेकिन जब तक हम स्वयं संगठित होकर मजबूत नहीं बनेंगे तब तक हमारी बात का असर सत्ताधारियों पर नहीं होगा। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में आगे बढ़ने के लिए हमें संगठित होकर संघर्ष करना होगा। युवा नेता पराक्रम राठौड़ ने कहा कि राव शेखा जी जब मात्र 12 वर्ष की आयु में शासक बने तो उन्हें केवल 12 गांव प्राप्त हुए थे। लेकिन उन्होंने अपने पराक्रम से 50 से अधिक लड़ाइयां लड़ी और उन्हें जीतकर 360 गांवों को अपने राज्य में शामिल किया। ऐसा उन्होंने अपने पुरुषार्थ और पराक्रम से किया। इस पुरुषार्थ और पराक्रम को हमें भी अपने जीवन में अपनाना होगा। आशीष दलाल ने शेखा जी को पूरे देश के लिए प्रेरणास्रोत बताया और उनकी तरह राष्ट्र सेवा करने की बात कही। विजय सिंह शेखावत ने सभी का स्वागत किया। उद्योगपति मेघराज सिंह रॉयल, आईएएस आरपी सिंह, नरेश चौहान, प्रदीप सिंह शेखावत, राकेश तंवर, बलवीर शेखावत, सवाई सिंह राठौड़ सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे। श्री शक्ति माता एवं राव नरहरदास समिति के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में लोहारू क्षेत्र में स्थित शेखावतों के 45 गांवों से समाजबंधु सम्मिलित हुए।

जन्म शताब्दी समारोह में सहयोग हेतु जताया आभार

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह में सहयोग करने वाले सहयोगियों का आभार ज्ञापित करने के लिए राजकुल सांस्कृतिक संस्था द्वारा 18 फरवरी को फरीदाबाद के सेक्टर 8 में स्थित महाराणा प्रताप भवन में बैठक आयोजित की गई जिसमें समारोह में सहयोग देने वाली दिल्ली एनसीआर क्षेत्र की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। राजकुल संस्था के अध्यक्ष नारायण सिंह शेखावत ने जन्म शताब्दी समारोह से जुड़े अनुभव साझा किए और आने वाले समय में सब मिलकर कैसे समाज के लिए बेहतर काम कर सकते हैं, इस पर चर्चा की। राजपूत सभा गुडगांव के अध्यक्ष तिलक राज सिंह चौहान ने कहा कि युवाओं को शिक्षित के साथ-साथ संस्कारवान भी होना चाहिए। समाज के युवा आगे आएं और सामाजिक कार्यों में अपनी अधिक से अधिक उपस्थित दर्ज करवाएं, इसके लिए उन्हें प्रेरित करने की आवश्यकता है। हरियाणा राजपूत प्रतिनिधि सभा रेवाड़ी के अध्यक्ष नरेश चौहान ने परिसीमन और हरियाणा के राजनैतिक परिदृश्य पर चर्चा की और अपने विचार रखे। क्षत्रिय एकता मंच (रजि.) के अध्यक्ष संजीव सिंह चौहान, ठाकुर एकता मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष सत्यभान सिंह चौहान, युवा राजपूताना संगठन (रजि.) के अध्यक्ष गौरव भाटी, क्षत्रिय जनकल्याण समिति (रजि.) के अध्यक्ष प्रमोद तोमर, क्षत्रिय विकास मंच (रजि.) के अध्यक्ष हरि सिंह सहयोगियों के साथ बैठक में सम्मिलित हुए।

माननीय संरक्षक श्री ने जानी वयोवृद्ध स्वयंसेवक इनायती की कुशल क्षेम

माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने 19 फरवरी को श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक कैलाश पाल सिंह जी इनायती से उनके निवास स्थान विजयनगर (चक 2 DAM) पहुंचकर भेंट की और उनकी कुशलक्षेम जानी।

गडरा रोड में जुझार रतनसिंह की प्रतिमा की स्थापना

गौ रक्षा के लिए अपना बलिदान देने वाले वीर जुझार रतन सिंह सोढा की प्रतिमा 22 फरवरी को गडरा रोड के मूलराज नगर में स्थित उनके नवनिर्मित मंदिर में स्थापित की गई। इस अवसर पर हिन्दूसिंह, प्रेमसिंह , गोविन्दसिंह, बाँकसिंह, जीवराजसिंह, पूर्व सरपंच रघुवीरसिंह, शंकरसिंह, भाजपा युवा नेता पिंटूसिंह, सीमाजन कल्याण समिति के विक्रमसिंह सहित अनेकों क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। स्थापना की पूर्व रात्रि को मंदिर में भजन-कीर्तन का भी आयोजन हुआ। मूर्ति स्थापना के बाद ध्वजारोहण, आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित गडरा सिटी में सन् 1805 में नवविवाहित युवा रतनसिंह सोढा विवाह के तीसरे दिन ही सराई जाति के लुटेरों से गायों की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। तभी से क्षेत्र में उनकी पूजा वीर जुझार के रूप में होती है।

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के इकोनॉमिक फोरम की कार्ययोजना बैठक

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उपक्रम एसकेपीएफ इकोनॉमिक फोरम की कार्ययोजना बैठक 16 फरवरी को जयपुर स्थित मॉडर्न स्कूल में आयोजित हुई जिसमें आगामी महीनों में फोरम की गतिविधियों को लेकर कार्ययोजना बनाई गई। सभी प्रतिभागियों ने अपने अपने व्यवसाय के बारे में अपने अनुभव साझा किए। आयुष सिंह ने बिजनेस मॉनिटरिंग का महत्त्व बताते हुए उसके विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। फोरम की आगामी गतिविधियों, सदस्यों की संख्या बढ़ाने एवं सभी सदस्यों की आगामी बैठक 16 मार्च को आयोजित करने का निर्णय किया गया।

संपादकीय

'स्व' की सही पहचान से जगेगा सच्चा स्वाभिमान

स्वाभिमान मानवीय मूल्यों में बहुत ऊंचा स्थान रखता है। यह अनेक अन्य श्रेष्ठ मूल्यों की तुलना में अधिक लोकप्रिय भी रहा है। क्षत्रिय जाति और स्वाभिमान का संबंध तो सदैव से अटूट रहा है, इतना कि क्षत्रिय होने का अर्थ ही स्वाभिमानी होना समझा जाता रहा है। स्वाभिमान की अतीव लोकप्रियता और क्षत्रियत्व व स्वाभिमान के इस अटूट संबंध के गहरे कारण व्यावहारिक मनोविज्ञान और क्षात्रधर्म के यौद्धेय प्रकटीकरण की परंपरा में ढूंढे जा सकते हैं। किंतु उनके विस्तार में जाए बगैर भी यह बात तो प्रत्यक्ष है कि स्वाभिमान सभी को प्रिय लगने वाला ऐसा मूल्य है जिसे धारण करने का दावा अधिकांश लोगों का होता है। यह भी स्पष्ट है कि हमारी संस्कृति में स्वाभिमान क्षत्रियत्व के अभिन्न अंग के रूप में सदैव प्रतिष्ठित रहा है और हमारे पूर्वजों ने अपने स्वाभिमान के लिए बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने में भी कभी हिचकिचाहट नहीं दिखाई। आज भी क्षत्रिय कुल में जन्म लेने के साथ ही स्वाभिमान से समझौता न करने की विशेषता की अपेक्षा हमसे अनिवार्य रूप से की जाती हैं और इसीलिए हमारे जीवन और व्यक्तित्व में स्वाभिमान एक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में स्वभावतः स्थापित हो जाता है। किंतु, वर्तमान दौर मूल्यों के अवमूल्यन का दौर है और जिन मूल्यों का अवमूल्यन नहीं हो पाता उन्हें यह दौर भ्रष्ट कर देता है। स्वाभिमान के मूल्य के साथ भी ऐसा ही हो रहा है और वह अहंकार से प्रतिस्थापित होकर भ्रष्ट हो रहा है। ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक है कि हम स्वाभिमान के वास्तविक अर्थ को समझें और उसे अहंकार के साथ समायोजित होकर भ्रष्ट होने से बचाएं।

आज हम अपने चारों ओर दृष्टिपात करें तो सभी जगह स्वाभिमान के दावे में अहंकार ही प्रकट होता हुआ दिखाई देगा। सामान्य व्यक्ति से लेकर विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिष्ठित व्यक्ति और नेतृत्वकर्त्ता आदि सभी स्वाभिमान के नाम पर अहंकार को पोषित करने वाला व्यवहार ही करते हुए दिखाई देते हैं। उदाहरणार्थ हमारे आसपास अक्सर इस बात की शिकायत करते हुए साथी मिल जाएंगे कि अमुक पारिवारिक आयोजन में मुझे नहीं बुलाया गया या मुझे उचित महत्व नहीं दिया गया और इस बात से अपने स्वाभिमान के आहत होने की बात भी कहते हुए वे दिखाई पड़ते हैं। ऐसा ही अक्सर सामाजिक आयोजनों में भी दिखाई पड़ता है जब विशिष्ट व्यक्ति या उनके समर्थक इस प्रकार की शिकायत करते हैं कि उक्त विशिष्ट व्यक्ति को वहां आमंत्रित नहीं किया गया या उसे बोलने का अवसर नहीं दिया गया या बैठने का उचित स्थान नहीं दिया गया आदि और इसे उक्त व्यक्ति के स्वाभिमान पर चोट बताया जाता है, उसका अपमान बताया जाता है। लेकिन इन शिकायतों की गहराई में देखें तो स्वाभिमान के स्थान पर सम्मान और महत्व की इच्छा रखने वाला अहंकार ही कारण रूप में दिखाई देगा। वास्तव में अहंकार और स्वाभिमान में मूल अंतर यही है कि स्वाभिमान किसी प्रकार की मांग या चाह पर निर्भर नहीं होता। अन्य व्यक्तियों से महत्व की इच्छा स्वाभिमान नहीं किया करता क्योंकि स्वयं के महत्व को पहचान लेना ही सच्चा स्वाभिमान है। जिसने स्वयं का महत्व जान लिया है उसे दूसरों से महत्व पाने की इच्छा नहीं रहेगी और ना ही महत्व न मिलने से उस स्वाभिमान को कोई चोट लगती है। स्वाभिमान तो स्वयं में पर्याप्त और पूर्ण होने का भाव है, वह कभी भी दूसरों से अपनी पूर्ति की मांग नहीं करता। हां, यदि कोई अन्य इस पर्याप्तता और पूर्णता में बाधा पैदा करने का प्रयत्न करे, इस भाव को विचलित करने के लिए अतिक्रमणकारी बल का प्रयोग करे तो स्वाभिमान झुकने से स्पष्ट मना भी करता है और उस आक्रमण के विरुद्ध संघर्ष से भी पीछे नहीं हटता। हमारे पूर्वजों ने भी इसी प्रकार के स्वाभिमान को अपनाया था न कि व्यक्तिगत सम्मान के आकांक्षी अहंकार को। इतिहास को देखें तो प्रताप के स्वाभिमान पर इसलिए चोट नहीं लगी थी कि उन्हें अकबर से किसी प्राप्ति की अथवा सम्मान की अपेक्षा थी बल्कि उनके स्वाभिमान ने इसलिए संघर्ष का रास्ता चुना क्योंकि अकबर मेवाड़ पर चढ़ाई कर उनके उस स्वाभिमान को आहत कर रहा था जो उनके अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम से जुड़ा था। चंद्रसेन के स्वाभिमान में बाधा उनके घोड़ों पर गुलामी की निशानी के रूप में शाही मोहरें लगाने के प्रस्ताव से पड़ती थी, अपनी किसी व्यक्तिगत अपेक्षा की उपेक्षा से आहत होकर उन्होंने संघर्ष का मार्ग नहीं चुना।

स्वाभिमान में 'स्व' बहुत महत्वपूर्ण है। इस 'स्व' की सही पहचान ही सही स्वाभिमान का आधार बन सकती है लेकिन यदि 'स्व' की पहचान ही गलत हो तो उस 'स्व' का अभिमान भी गलत होकर अहंकार में बदल जाएगा। इसलिए हमारे भीतर सच्चा स्वाभिमान तभी विकसित हो सकता है जब हम स्वयं की सही पहचान कर सकेंगे। हमारे पूर्वज अपनी पहचान जानते थे कि वे क्षत्रिय हैं और इसलिए उनका स्वाभिमान उनके क्षत्रियत्व से जुड़ा था। जहां उनके क्षत्रिय धर्म पर आंच आती थी वहीं उनके स्वाभिमान पर भी आंच आती थी और इसीलिए वे ऐसे किसी भी व्यक्ति या शक्ति के विरुद्ध डटकर संघर्षरत होते थे जो उनके क्षत्रियत्व रूपी स्वाभिमान पर चोट करता हो। लेकिन क्या आज हम अपनी पहचान अपने कर्तव्य, अपने क्षात्रधर्म के साथ उस प्रकार जोड़ पा रहे हैं जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने जोड़ी थी? यदि हम ऐसा नहीं कर पा रहे हैं तो हम उनके जैसा स्वाभिमान भी अपने भीतर नहीं जगा पाएंगे और स्वाभिमान के भ्रम में अहंकार को ही पालते रहेंगे। स्वाभिमान और अहंकार में यह अंतर भी समझने की आवश्यकता है कि न झुकना स्वाभिमान का निरपेक्ष गुण नहीं है बल्कि आक्रमणकारी, शत्रु और विरोधी के सामने ना झुकना ही स्वाभिमान का गुण है लेकिन वही स्वाभिमान अपनत्व, प्रेम और श्रेष्ठता के प्रति पूर्ण समर्पण से झुकना स्वीकार करता है। जबकि अहंकार ना प्रेम में झुकता है, ना किसी श्रेष्ठता को ही स्वीकार करके कभी नमनशील होता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिक्षण इसीलिए हमारे अहंकार पर चोट करता है और हमारी स्वयं से वास्तविक पहचान कराकर स्वाभिमान को विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करता है। इससे भी आगे, शिक्षण के सामूहिक स्वरूप के कारण वह स्वाभिमान भी सामूहिक रूप में विकसित होता है, इसीलिए उसमें व्यक्तिगत स्वाभिमान के आवरण में अहंकार को पनपने का अवसर नहीं मिलता। इसलिए आएं, हम अपने अहंकार को गला कर उस सच्चे स्वाभिमान को जागृत करने के मार्ग पर बढ़ें जो हमारे कर्तव्य से, हमारे क्षत्रियत्व से जुड़ा हो न कि अन्यों से सम्मान और महत्व को पाने का आकांक्षी हो। हम अपने कर्तव्य को पहचानें और कोई भी शक्ति हमें उस कर्तव्य से विचलित न कर सके, यही हमारे स्वाभिमान की सच्ची कसौटी है। ऐसे स्वाभिमान के निर्माण के लिए सबसे पहली आवश्यकता अपने भीतर प्रसुप्त क्षत्रियत्व को जागृत कर आचरण में ढालने की है और श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्रशिक्षण हमें इसका व्यावहारिक मार्ग सुलभ कराता है।

भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में सिरोही का योगदान

आबू एवं सिरोही का क्षेत्र इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व का त्रिवेणी संगम रहा है। फ्रांस के विद्वान दीतरा एवं भारतीय मनीषी एस एल हीरा ने आर्यावली (अरावली) को हिमालय से भी प्राचीन बताया है। इस पर्वतमाला में स्थित आबू पर्वत पौराणिक काल से अपनी विशिष्टता के कारण विश्व विख्यात रहा है। कर्नल टॉड ने इसे हिंदुओं का ओलंपस कहा है। एक ओर गुरु दत्तात्रेय ऋषि का आश्रम (गुरु शिखर) मानव के आध्यात्मिक चिंतन का प्रतीक है, वहीं वशिष्ठ आश्रम आस्था का महान केंद्र रहा है। भगवान श्री राम एवं प्रतापी पांडवों के यहां विचरण करने का उल्लेख भी पाया जाता है। वशिष्ठ आश्रम को महान तपस्या स्थल एवं पुण्य का स्थल बताया गया है। विदर्भ सम्राट नल की गुफा, सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र द्वारा राजपाट छोड़कर इसी तपोभूमि में विचरण करने, राजा भर्तृहरि एवं राजा गोपीचंद के वैराग्यमय जीवन के क्षण, भगवान महावीर स्वामी की तपस्या स्थली, राजा चंदन मलइयागर की कथाओं का केंद्र होने के साथ ही यहां की एकांत रमणीय गिरिकंद्राओं में अनेकों तपस्वी ऋषि-मुनियों के आश्रम रहे हैं तथा कालांतर में यह राजाओं-महाराजाओं एवं ब्रिटिश सत्ता का भी केंद्र रहा है। भारत के प्रमुख क्षत्रिय राजवंशों के उत्थान का इतिहास भी आबू से जुड़ा पाया जाता है। मध्यकालीन ऐतिहासिक काल में आबू के प्रतापी परमार शासक धारा वर्ष परमार द्वारा सन् 1178 ई. में मोहम्मद गौरी को कासींद्रा के युद्ध में पराजित करने की गौरव गाथा, महाराव विजयराज देवड़ा द्वारा सन् 1298 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की सेना को परास्त करने का वृतांत, महाराव सुरतान देवड़ा द्वारा शक्तिशाली सम्राट अकबर की सेना को सन-1583 ई. में दत्तानी के मैदान में धूल चटाने की गौरव गाथा से इतिहास भरा पड़ा है। इसी क्रम मे भारतीय इतिहास के स्वतंत्रता संग्राम में भी सन् 1857 की क्रांति की घटनाओं में भी सिरोही के स्वतंत्रता सेनानियों ने देश की स्वतंत्रता में अपनी आहुति दी थी। इसी प्रकार एक और जलियांवाला बाग हत्याकांड के नाम से प्रसिद्ध तत्कालीन तहसील रोहिडा के भूला वालोरिया क्षेत्र में हुए आदिवासियों का बहुत बड़ा आंदोलन, जिसका नेतृत्व मोतीलाल तेजावत द्वारा किया गया था, भी इसी क्षेत्र में हुआ था। 6 मई 1922 ई. को हुए आदिवासियों के आंदोलन को ब्रिटिश सेना द्वारा मेजर प्रीचर्ड के नेतृत्व में अंधाधुंध गोलियां से दबाया गया, जिसमें सैकड़ों पुरुष, महिलाएं एवं मासूम बच्चे भी आजादी की आहुति में बलिदान की अमर गाथा लिख गए। इतना ही नहीं, ब्रिटिश सेना द्वारा मानवता की हदें पार करते हुए भूला वालोरिया क्षेत्र में आग लगाकर क्षेत्र में दहशत फैलाई गई थी और यहां के लोकगीतों में यह हृदय विदारक घटना आज भी अंकित है - 'भूलू ने वालोंरियूं... भूलू गोम बेले रे...धोमों भाइयों धामजो... भूलू गोम बेले रे... भूलू बेले.. भूलू बेले.. भूलू गोम बेले रे..'।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सेना में अधिकारी बनी समाज की प्रतिभाएं

नागौर जिले की परबतसर तहसील के खानपुर गांव की निवासी रक्षिता राठौड़ भारतीय सेना में सब लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त हुई है। आईएनएस वलसुरा नौसेना अकादमी जामनगर में हुई पासिंग आउट परेड के उपरांत भारतीय नौसेना में तकनीकी अधिकारियों के पहले महिला बैच में 20 वर्षीय रक्षिता की नियुक्ति हुई है। वे नौसेना में तकनीकी अधिकारी बनने वाली प्रदेश की प्रथम महिला है। उत्तराखंड के हल्द्वानी की मूल निवासी सोनी बिष्ट भी एसएसबी के साक्षात्कार में सफल होकर ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी में प्रशिक्षण के लिए चुनी गई है। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद वह सेना में लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त होगी। सोनी बिष्ट के पति नीरज सिंह भंडारी भी भारतीय सेना की 18 कुमाऊं रेजिमेंट में थे जिनकी जनवरी 2023 में एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के रिछपुरा गांव की निवासी आकृति भदौरिया का चयन भी भारतीय सेना

की तकनीकी विंग में लेफ्टिनेंट के पद के लिए हुआ है। आकृति के पिता राम सिंह भदौरिया भी सेना में कैप्टन हैं।

खुशपाल सिंह भाटा इंस्पायर अवार्ड के लिए चयनित

बालोतरा जिले के भाटा गांव निवासी खुशपाल सिंह चौहान को भारत सरकार द्वारा इंस्पायर अवार्ड के लिए चयनित किया गया है। खुशपाल सिंह जालौर के धानसा गांव के सरस्वती विद्या मंदिर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी है। उन्होंने इस वर्ष आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान मेले में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। उल्लेखनीय है कि इंस्पायर अवार्ड योजना भारत सरकार द्वारा विद्यार्थियों के नवाचारों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई है। इसके तहत वैज्ञानिक एवं तकनीकी सोच के साथ रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ किए गए नवाचार हेतु चयनित विद्यार्थियों को दस हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है।

जयदीप सिंह बने दिल्ली फुटबॉल टीम के कप्तान

हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के खेड़ी तलवाना गांव के मूल निवासी जयदीप सिंह को दिल्ली फुटबॉल टीम का कप्तान बनाया गया है। उन्हें इटानगर में आयोजित हो रही संतोष ट्रॉफी राष्ट्रीय फुटबाल चैंपियनशिप के फाइनल राउंड में भाग लेने वाली 22 सदस्यीय दिल्ली टीम की कमान सौंपी गई है।

विवाह के अवसर पर राजपूत छात्रावास को आर्थिक सहयोग

सीकर जिले के बाटडानाऊ गांव के निवासी जगदीश सिंह शेखावत ने अपने पुत्र के चुरू जिले के देपालसर निवासी मोहन सिंह राठौड़ की पौत्री के साथ विवाह के अवसर पर चुरू राजपूत छात्रावास के लिए 51000 रुपए का आर्थिक सहयोग भेंट किया। विवाह के अवसर पर समाज के छात्रों की शिक्षा के निमित्त किए गए इस सहयोग की सभी के द्वारा सराहना की गई।

बड़ोद में राजपूत एकता एवं प्रतिभा सम्मान समारोह

बहरोड़ क्षेत्र के बड़ोद कस्बे में नव राजपूत जागृति संस्थान, राजपूत सभा (बहरोड़) एवं श्री राजपूत करणी सेना के संयुक्त तत्वावधान में राजपूत एकता एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन 25 फरवरी को किया गया। समारोह के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर समाज को गौरवान्वित करने वाली 151 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। बानसूर विधायक देवी सिंह शेखावत ने बच्चों को शिक्षित व संस्कारवान बनाने के लिए उपस्थित लोगों से आह्वान किया। बामनवास गांव की सरपंच बबीता कंवर ने बालिकाओं को शिक्षित करने की आवश्यकता जताई, साथ ही शराब पर रोक लगाने का भी आग्रह किया। प्रताप सिंह कालवी, राजेंद्र सिंह राघव, संजय सिंह राजावत,

बिजेंद्र सिंह चौहान, लक्ष्मण सिंह राजावत, हरि सिंह शेखावत आदि वक्ताओं ने भी अपने विचार रखते हुए समाज को एकजुट होकर शिक्षा की ओर अग्रसर होने और नशे आदि कुरीतियों से दूर रहने की बात कही। नव राजपूत जागृति संस्थान के अध्यक्ष कमल सिंह शेखावत सहयोगियों के साथ कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

सामूहिक आयोजनों में नशे का सेवन बंद करने का निर्णय

जालौर जिले के बागरा क्षेत्र के नारणावास गांव में एसराणा पर्वत पर स्थित श्री जागनाथ महादेव मंदिर में छोटी सिंधलावटी के नौ गांव के सिंधल राजपूत समाज की बैठक 25 फरवरी को आयोजित हुई जिसमें सामूहिक आयोजनों में नशीले पदार्थों के सेवन को प्रतिबंधित करने पर चर्चा की गई। सभी समाजबंधुओं ने विवाह समारोह में और मृत्यु के बाद के बारह दिनों में सभी तरह के नशे से दूर रहने और इसे सामूहिक निर्णय द्वारा प्रतिबंधित करने का सुझाव रखा। 17 मार्च को पुनः बैठक आयोजित कर इस संबंध में अंतिम निर्णय लेने का निश्चय किया गया। महंत महेंद्र

भारती और विष्णु भारती की उपस्थिति में आयोजित बैठक में सुमेर सिंह धानपुर, रूप सिंह नारणावास सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

हिंदी साहित्य में महाराणा प्रताप

जीवनी, निबंध एवं शोधपरक ऐतिहासिक साहित्य की सूची

1. **प्रताप सिंह** - मुंशी देवीप्रसाद
2. **महाराणा प्रताप (कहानी)** - मुंशी प्रेमचंद
3. **महाराणा प्रताप और उनका युग** - डॉ देव कोठारी
4. **हल्दी घाटी** - डॉ हीरालाल श्रीमाली राजसमंद
5. **वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप** - गौरीशंकर हीरानन्द ओझा
6. **महाराणा प्रताप**- डॉ. भवानी सिंह राणा
7. **महाराण प्रताप**- ठा. ईश्वर सिंह मडाढ
8. **महाराणा प्रताप-व्यक्तित्व और कृतित्व** - डॉ देवीलाल पालीवाल
9. **मेवाड़ का गौरव**- जी.एस. आचार्य
10. **महाराणा प्रताप**- राजेंद्र शंकरभट्ट
11. **मेवाड़ के महाराणा और शहंशाह अकबर** - राजेंद्रशंकर भट्ट
12. **स्वतंत्रता के पुजारी- महाराणा प्रताप सिंह** - देवीसिंह मंडावा
13. **महाराणा प्रताप के प्रमुख सहयोगी** - श्री माथुर शर्मा एवं राणावत
14. **युग पुरुष महाराणा प्रताप**- डॉ. हुकम सिंह भाटी
15. **महाराणा प्रताप ऐतिहासिक अध्ययन** - डॉ. हुकम सिंह भाटी
16. **महाराणा प्रताप का परिवार और सामंत गण** - डॉ. हुकम सिंह भाटी
17. **महाराणा प्रताप का युग**- डॉ. श्री कृष्ण जुगनू
18. **महाराणा प्रताप- (जीवन चरित्र)**- विश्वनाथ
19. **चेतक और प्रताप**- मनोरमा जफा
20. **हिंदवा सूरज महाराणा प्रताप** - ठा. सुरजन सिंह झाझड़
21. **महाराणा प्रताप**- श्री राम शर्मा
22. **प्रताप चरित्र**- बाबूराम नारायण
23. **महाराणा प्रताप**- लक्ष्मीचंद
24. **प्रतापी प्रताप**- हरिशंकर शर्मा
25. **महाराणा प्रताप (संघर्ष और स्वाभिमान के प्रतीक)**- डॉ. आर.पी. व्यास
26. **महाराणा प्रताप और हल्दी घाटी** - डॉ. उम्मेद सिंह राठौड़
27. **महाराणा प्रताप और सम्राट अकबर** - डॉ. सत्य प्रकाश
28. **महाराणा प्रताप और तंवर नरेश** - रत्न चन्द्र अग्रवाल
29. **वीर भावना के प्रमुख प्रेरक-महाराणा प्रताप** - डॉ. महेंद्र सागर प्रचंदिया
30. **हिंदी काव्य और महाराणा प्रताप** - डॉ. रामगोपाल 'दिनेश'
31. **महाराणा प्रताप से संबंधित स्रोत एवं स्थान** - सं राणावत, गुप्ता, चूंडावत
32. **महाराणा प्रताप का दरबारी पंडित चक्रपाणि मिश्र और उसका साहित्य**- डॉ. श्री कृष्ण
33. **महाराणा यश प्रकाश**- ठा.भूर सिंह शेखावत
34. **छापली और महाराणा प्रताप (ल.पु.)** - चंदन सिंह शेखावत
35. **महाराणा प्रताप-जीवनी,महत्व व देन** - डॉ. रघुवीर सिंह
36. **महाराणा प्रताप (ख्यातों में)**- डॉ. मनोहर सिंह राणावत
37. **महाराणा प्रताप**- रामचन्द्र बोड़ा,जोधपुर
38. **प्रताप का युग**- श्री कृष्ण जुगनू
39. **राष्ट्र रत्न महाराणा प्रताप** - जनार्दन राय,नाहर युनिवर्सिटी
40. **भारत का वीर योद्धा महाराणा प्रताप** - सुशीलकुमार
41. **महाराणा प्रताप**- डॉ. भवान सिंह राणा
42. **महाराणा प्रताप सम्प्रति स्मारिका** - वासुदेव चतुर्वेदी चितौड़गढ
43. **महाराणा प्रताप, परम्परा विशेषांक (124-125अंक)**
44. **महाराणा प्रताप स्मृति ग्रँथ** - सं. डॉ देवीलाल पालीवाल

काव्य /कविता

1. **हल्दी घाटी (खंड काव्य)**- श्याम नारायण पांडेय
2. **महाराणा का महत्व**- महाकवि जय शंकर प्रसाद
3. **प्रताप महाकाव्य**- रणवीर सिंह शक्तावत
4. **प्रण वीर प्रताप**- पं गोकुल चंद शर्मा
5. **साक्षी है अरावली**- राजेन्द्र मोहन भटनागर
6. **प्रताप विसर्जन**- राधाकृष्ण दास
7. **श्री प्रताप स्तव** - लोचन प्रसाद पाण्डेय
8. **अजय प्रताप (खंड काव्य)** - डॉ. रामकृष्ण शर्मा भरतपुर
9. **महाराणा प्रताप (खंड काव्य)**- डॉ. भोला शंकर व्यास
10. **मेवाड़ धरती का प्रताप**- सुरेन्द्र दत्त बहुगुणा उदयपुर
11. **हल्दी घाटी (काव्य)**- पं जनार्दन राय नागर
12. **स्मृति गान (काव्य)**- शांति प्रिय द्विवेदी
13. **महाराणा प्रताप और स्वतंत्रता (कविता)** - शंभुदयाल श्री वास्तव
14. **चेतक**- ब्रजेन्द अवस्थी
15. **महाराणा प्रताप (काव्य)**- राम गोपाल शर्मा नवलगढ
16. **उतर हल्दी घाटी**- डॉ. दयाकृष्ण विजय वर्गीय विजय
17. **महाराणा प्रताप (काव्य)**- आनन्द शर्मा जयपुर
18. **प्रताप प्रकाश**- गोपाल नारायण बहुरा
19. **प्रताप प्रतिज्ञा**- कवि नथूराम शुक्ल वांकानेर
20. **सत्य प्रणधर प्रताप**- पंडित बंशीधर शर्मा डीडवाड़ा
21. **हल्दी घाटी की एक शाम (कविता)** - शिशुपाल सिंह शिशु
22. **आह्वान**- कविवर सोहनलाल द्विवेदी
23. **तुम्हीं, (कविता)**- हरिकृष्ण 'प्रेमी'

नाटक

1. **आज का प्रताप**- हरदान हर्ष
2. **प्रताप प्रतिज्ञा**- जगनाथ प्रसाद मिलिंद
3. **महाराणा प्रताप**- नरोत्तम व्यास
4. **महाराणा प्रताप**- बाबू राधाकृष्ण दास
5. **सूर्यास्त का भोर**- राजेन्द्र मोहन भटनागर

उपन्यास

1. **महाराणा प्रताप**- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
2. **महाराणा प्रताप एक अंतहीन युद्ध**- डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर
3. **नीले घोड़े का सवार**- डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर
4. **एकलिंग का दीवान**- डॉ. राजेंद्र मोहन भटनागर
5. **चेतक घोड़े का सवार**- श्याम सुंदर भट्ट
6. **हल्दी घाटी का युद्ध**- सुशील कुमार
7. **हल्दी घाटी**- डॉ. देवीलाल पालीवाल

संकलन- संग्राम सिंह सचियापुरा,
बज्जू,बीकानेर ,राज .334305
मो. नं. 9024885927

राजपूत संस्कृति का अन्य धर्मों एवं देशों पर प्रभाव

प्राचीन समय मे सम्पूर्ण सभ्य संसार पर ही राजपूतो का एकछत्र शासन रहा है। अतएव राजपूत संस्कृति के रंग भी सम्पूर्ण विश्व के अंग अंग मे समाये हुए हैं। मौर्यों का शासन अफगानिस्तान तक विस्तृत था । उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का शासन काबा तक विस्तृत था। बाली से लेकर बाल्टिक सागर तक और कोरिया से लेकर काबा तक हमारे पूर्वजों का शासन था। नेपाल, भूटान, बर्मा, मलाया, थाईलैंड, श्रीलंका, जावा, सुमात्रा, बोर्निया, चंपा, बाली, फिजी, तिब्बत, चीन, जापान, रूस, लाओस, कंबोडिया, वियतनाम, कोरिया, ईरान और इराक आदि ये सभी देश वृहत्तर भारत के अंग रहे हैं। यहाँ आर्य संस्कृति के अंग आज भी प्रचुर मात्रा मे मिलते हैं। बोगज काई के शिलालेखो से प्रमाणित होता हैं कि मध्य एशिया मे इंद्र व वरुण की पूजा की जाती थी।

सम्राट अशोक ने अपने धर्म- प्रचारकों को उत्तरी - पूर्वी एशिया के देशों के साथ साथ मिश्र ओर यूरोप तक भेजा था। इसके प्रमाण वहां के न केवल शिलालेख ही हैं बल्कि 'अलबेरुनी का भारत' भी हैं । अलबेरुनी लिखता है कि पुराने समय में खुरासान, फारस, इराक, मिस्र ओर सीरिया तक प्रदेश बौद्ध मतावलंबी था । आज भी वहां अनेको मंदिरों के अवशेष मिलते हैं। ईसा मसीह ने भारत मे शिक्षा ग्रहण की थी। अतः ईसाई धर्म मे आर्य संस्कृति 'राजपूत संस्कृति' का प्रभाव प्रचुर मात्रा मे मिलता हैं । ईसाई धर्म मे अवशेषांग पूजा और माला रखने का काम उस पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव है। ईसाई गिरजाघरों और बौद्ध चैत्यों मे बहुत अधिक समानता हैं । रोमन कैथोलिक की पूजा-अर्चना, धूप-दीप आर्य संस्कृति के अंग हैं। पारसी धर्म ने अग्नि- पूजा और गोरक्षा राजपूत संकृति से ही ग्रहण किए हैं । मुस्लिम धर्म मे यद्यपि मूर्ति-पूजा का खंडन क्या गया है किंतु फिर भी शिया पंथ में मूर्ति पूजा की जाती है। इस पंथ मे पीरों-पैगम्बरों की पूजा स्पष्टतः राजपूत संकृति का अंग है। इस्लाम धर्म का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान काबा है। वास्तव मे यह सम्राट विक्रमादित्य का बनाया हुआ शिव मंदिर है। यह उन्होंने अपनी राजधानी उज्जैन स्तिथ महाकाल के आधार पर बनाया था। अतएव इन दोनों भवनों की स्थापत्य कला एक जैसी हैं। यही नही, वरन इनकी पूजा पद्धति भी समान हैं। यहां परिक्रमा की व्यवस्था है। जबकि किसी भी मस्जिद मे परिक्रमा नही की जाती। भारतीय संकृति ओर इतिहास के अनुसार यह वह स्थान हैं जहाँ वामन भगवान ने सम्पूर्ण पृथ्वी के नापने के लिए अपना दूसरा कदम रखा था । यहां एक फव्वारा है जिसे आर्य ग्रंथों में गुप्त गंगा कहा गया है। इसका जल हज करने वाला प्रत्येक यात्री बड़ी श्रद्धा से घर लाता है ठीक उसी तरह जिस तरह हिंदू गंगाजल लाता है। मुसलमान इस पवित्र जल को आबे- हयात अथवा आबे- दम दम कहते है। यह मुस्लिम संस्कृति पर स्पष्टतः राजपूत संकृति का ही प्रभाव है।

संदर्भ- ठा. ईश्वर सिंह मंडाढ जी कृत 'राजपूत वंशवाली'

प्रेषक- वरुण प्रताप सिंह, सिसोदिया,
मेरठ, उत्तरप्रदेश

(पृष्ठ एक का शेष)

समाज हित...

उन्होंने कहा कि आज के वातावरण में जब हर व्यक्ति केवल अपने और अपने परिवार के लिए जीता है, ऐसे में समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए जीने की श्री क्षत्रिय युवक संघ की बात कठिनता से समझ में आती है और इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की गति हमें धीमी लगती है। यह काम अत्यंत कठिन है, हमारे प्रयत्नों के अनुरूप परिणाम का आना भी आवश्यक नहीं है लेकिन निराश होने की कोई बात नहीं है। श्री क्षत्रिय युवक संघ गीता के निष्काम कर्मयोग के सिद्धांत के आधार पर कार्य करता है। हमको काम परिणाम के लिए नहीं करना है बल्कि इसलिए करना है कि यह हमारा कर्तव्य है। उस कर्तव्य कर्म को करना ही धर्म का पालन करना है और वही हमारे क्षत्रिय कुल में जन्म लेने को सार्थक करता है। व्यक्तिगत रूप से चाहे कोई धनी बन जाए, कोई बड़ा अधिकारी बन जाए, कोई बड़ा व्यापारी बन जाए या बड़ा राजनेता बन जाए, उससे समाज का हित होता दिखाई नहीं पड़ता। उसका कारण यही है कि उनके भीतर क्षत्रियत्व नहीं जगा है। जब तक वे क्षत्रिय के धर्म का पालन नहीं करते तब तक क्षत्रिय का हित संभव नहीं है। हम क्षत्रियत्व के प्रतीक के रूप में वेशभूषा, तलवार जैसी चीजों को तो महत्व देते हैं लेकिन अपने भीतर क्षत्रियत्व के जागरण का उपाय नहीं करते। यदि हमारे भीतर क्षत्रियत्व नहीं है और बाहर हम उसके प्रतीकों को धारण कर क्षत्रिय बनने का दिखावा करते हैं तो एक बहरूपिये से अधिक हम कुछ नहीं है। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें बहरूपिया नहीं बनाना चाहता, बल्कि सच्चे क्षत्रिय के रूप में हमारा निर्माण करना चाहता है। यह बहुत कठिन कार्य है और निरंतर अभ्यास से ही यह संभव होगा, इसीलिए अपनी शाखाओं और शिविरों आदि के माध्यम से संघ इसका अभ्यास करवा रहा है। संघप्रमुख श्री ने उपस्थित जनों से अपने दायित्व को समझने का आग्रह करते हुए कहा कि आपमें से अधिकांश लोग संघ से परिचित हैं, संघ के शिविर भी आप में से अनेकों ने किए हैं। लेकिन क्या कभी आपने यह विचार किया है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ क्यों चलना चाहिए? उसकी समाज में क्या उपयोगिता है? समाज में इस प्रकार की संस्था को काम करना चाहिए अथवा नहीं? यदि हां, तो इस प्रकार की संस्था में हमारा क्या योगदान होना चाहिए, इस पर भी चिंतन करना चाहिए। हम सभी आयु की दृष्टि से परिपक्व लोग हैं, परिवार में अपनी सभी जिम्मेदारियां को भी हम निभाते हैं लेकिन क्या समाज के प्रति भी हमारी कोई जिम्मेवारी बनती है, यह प्रश्न हमारे भीतर उठना चाहिए। इस प्रश्न पर चिंतन करके जो व्यक्ति अपने परिवार से आगे समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना प्रारंभ कर देता है, उसे निभाने का प्रयत्न प्रारंभ कर देता है तो वह पूज्य तनसिंह जी द्वारा दिखाए मार्ग पर भी चलना प्रारंभ कर देता है। कार्यक्रम में काणेटी गांव के समाजबंधु मातृशक्ति सहित उपस्थित रहे। केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा, वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवान सिंह काणेटी और छनुभा पछेगाम भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। संघप्रमुख श्री का गुजरात प्रवास 23 व 24 फरवरी को रहा। 23 को जयपुर से रवाना होकर रेल द्वारा अहमदाबाद पहुंचे, वहां से दिग्विजय सिंह पलाड़ा को साथ लेकर भावनगर पहुंचे और केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची के पुत्र के विवाह में शामिल हुए। भावनगर से 24 फरवरी को खोडियार माता मंदिर में दर्शन कर नारी गांव पहुंचे जहां शाखा के स्वयंसेवकों से मुलाकात की। नारी से धोलेरा आकर धोलेरा के स्वयंसेवकों के परिवारों से मिले, शाम को काणेटी कार्यक्रम में शामिल हुए और रात्रि विश्राम साणंद में किया। साणंद से 25 फरवरी को बाड़मेर पहुंचे और वहां केंद्रीय कार्यकारी कृष्ण सिंह राणीगांव की पुत्री के विवाह के उपलक्ष में आयोजित आशीर्वाद समारोह में शामिल हुए। वहां से 25 को ही रवाना होकर 26 को जयपुर पहुंचे।

पिस्तौल...

इसके बावजूद नरेंद्र सिंह ने अद्भुत साहस दिखाते हुए एक लुटेरे को पकड़े रखा जिससे गोलीबारी की आवाज सुनकर पहुंचे आसपास के लोगों ने उसे पकड़ लिया। घायल नरेंद्र सिंह को तुरंत उपचार के लिए मणिपाल अस्पताल में भर्ती कराया गया। अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए नरेंद्र सिंह ने जो साहस और वीरता दिखाई है वह प्रशंसनीय और सभी के लिए प्रेरणादायी है।

गिलहरी की...

लेकिन साथ ही जो समाज की प्रतिभाएं हैं उनकी प्रतिभा समाज के हित में कैसे उपयोग हो, इस पर भी चिंतन करने की आवश्यकता है। राजनीति, व्यापार, कृषि, प्रशासन, खेल आदि सभी क्षेत्रों में हमें समाज को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। हम समाज को मातृस्वरूपा मानकर उसकी सेवा करना प्रारंभ कर दें और समाज को नुकसान पहुंचाने वाली किसी भी गतिविधि से दूर रहें तो हम समाज को पुनः उस गौरवशाली स्थिति में पहुंचा सकेंगे जहां हमारे पूर्वजों ने पहुंचाया था। अजमेर स्थित जवाहर रंगमंच में 25 फरवरी को आयोजित समारोह को मुख्य अतिथि डॉ. शिव सिंह राठौड़ (पूर्व अध्यक्ष राजस्थान लोक सेवा आयोग) ने भी संबोधित किया और कहा कि समाज की प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिलना आवश्यक है लेकिन प्रोत्साहन के साथ ही उन्हें सही मार्गदर्शन भी मिलना चाहिए। यह हम सब का सामूहिक दायित्व है कि आने वाली पीढ़ी को सही मार्गदर्शन उपलब्ध करवाएं, साथ ही उन्हें आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक सुविधाओं की भी व्यवस्था करें। उन्होंने कहा कि एक साथ मिलकर काम करने से ही समाज के सामने उपस्थित चुनौतियों का सामना किया जा सकता है, इसलिए संगठित रहें और एक दूसरे का सहयोग करें। डॉ. नरपत सिंह शेखावत (पूर्व प्राचार्य आर.यू.एच.एस. जयपुर) ने कहा कि युवाओं को नकारात्मकता से दूर रहते हुए अपने भविष्य निर्माण के दत्तचित्त होकर परिश्रम करना चाहिए, तभी वांछित सफलता प्राप्त होगी। विक्रम सिंह (सेशन जज, आणंद) ने कहा कि जीवन में बाधाएं आनी स्वाभाविक है लेकिन उन बाधाओं से विचलित होकर अपने लक्ष्य को छोड़ना नहीं चाहिए। हर परिस्थिति में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की धुन जिसमें हो, वही जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। वीरेंद्र सिंह कानावत (विधायक, मसूदा) ने शिक्षा और अनुशासन का महत्त्व बताते हुए युवाओं से सभी प्रकार के व्यसन आदि से दूर रहने का आह्वान किया। दलपत सिंह रुणिजा (निदेशक, नोबेल ग्रुप ऑफ स्कूल्स), श्री प्रहलाद सिंह तंवर (निदेशक, सरस्वती ग्रुप एजुकेशन) ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। श्री क्षत्रिय प्रतिभा विकास एवं शोध संस्थान, अजमेर के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह राठौड़ नैणियां ने स्वागत भाषण में सभी अतिथियों का अभिनंदन एवं स्वागत करते हुए संस्थान की भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। डॉ. लोकेश कुमार शेखावत (पूर्व वाइस चांसलर जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर) ने संस्थान का परिचय प्रस्तुत किया। समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियां अर्जित करने वाली समाज की 101 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। मूल सिंह रुणिचा ने कार्यक्रम के अंत में सभी का आभार ज्ञापित किया। मंच संचालन जय सिंह राठौड़, डॉ. अंजु कल्याणवत और डॉ. अर्चना राठौड़ ने किया।

जेईई मेंस परीक्षा में दक्ष वीर सिंह और विकास तंवर का उत्कृष्ट प्रदर्शन

जालौर जिले के रोड़ला गांव के दक्ष वीर सिंह पुत्र गर्वेंद्र सिंह ने जेईई मेंस परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 98.43 परसेंटाइल प्राप्त किए हैं। हरियाणा के पलवल जिले के स्वामिका गांव के निवासी विकास तंवर पुत्र नरेंद्र सिंह ने भी जेईई मेंस में 97.29 परसेंटाइल प्राप्त किए है। पथप्रेरक परिवार दोनों प्रतिभाओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

रवि कुमार ने मुक्केबाजी में जीता कांस्य पदक

हरियाणा के झज्जर जिले के लोहारी गांव निवासी रवि कुमार पुत्र मुनीम चौहान ने बेंगलुरु में 2 से 18 फरवरी तक आयोजित हुई आरईसी साउदर्न ओपन टैलेंट हंट बॉक्सिंग चैंपियनशिप में भाग लेकर कांस्य पदक जीता। सामान्य आर्थिक पृष्ठभूमि वाले परिवार से आने वाले रवि ने भारतीय खेल प्राधिकरण और रूरल इलेक्ट्रिसिटी कॉर्पोरेशन (आरईसी) के सहयोग से भारतीय मुक्केबाजी संघ द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित इस प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में 54-57 किग्रा वर्ग में यह पदक जीता।

(पृष्ठ चार का शेष)

भारत के...

इसी क्रम में सन् 1934 ई. में सिरोही के प्रवासी लोगों ने प्रजामंडल की स्थापना कर गांधीवादी नेता गोकुल भाई भट्ट के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महान पत्रकार भीमाशंकर शर्मा ने सिरोही संदेश का प्रकाशन कर जन जागृति की अलख जगाई थी। सन 1938 में हरिपुर कांग्रेस अधिवेशन में प्रजामंडल आंदोलन के गोकुल भाई भट्ट ने प्रतिनिधित्व किया था। सन 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भी सिरोही में जुलूस निकाले गए एवं गिरफ्तारियां हुई जो 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन में सिरोही क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। 15 अगस्त 1947 को भारत माता की आजादी के बाद 1948 में सिरोही राज्य प्रजामंडल का अंतिम अधिवेशन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में ग्राम पाड़ीव में हुआ था। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आबू सिरोही के शासकों ने मध्यकाल में भी अपनी स्वतंत्रता बनाए रखी एवं इसी प्रकार 19वीं-20वीं सदी में भी अन्याय का प्रतिकार कर भारत के स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक आधार प्रदान किया। अतः सिरोही का आजादी के आंदोलन में गौरवपूर्ण योगदान रहा है।

डॉक्टर उदय सिंह डिगार
इतिहासकार एवं प्रांत उपाध्यक्ष, इतिहास संकलन समिति।

रेवन्त सिंह जाखासर को मातृशोक

श्रीमती राम कंवर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक रेवन्त सिंह जाखासर की माता जी **श्रीमती राम कंवर** धर्मपत्नी स्व. गुमान सिंह जी का देहावसान 17 फरवरी 2024 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

उत्तमसिंह नाहरसिंहनगर को पितृशोक

श्री गायड़ सिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक उत्तम सिंह नाहरसिंहनगर के पिता **श्री गायड़ सिंह जी** का देहावसान 13 फरवरी 2024 को 75 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

बाड़मेर में राजपूत युवा सम्मेलन और प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

बाड़मेर जिला मुख्यालय पर स्थित भगवान महावीर टाउन हॉल में राजपूत युवा सम्मेलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन 24 फरवरी को हुआ। कार्यक्रम में राजस्थान प्रशासनिक सेवा, कॉलेज शिक्षा, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेल जगत में योगदान देने वाली समाज की प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रावत त्रिभुवन सिंह बाड़मेर ने कहा कि ऐसा आयोजन कई वर्षों बाद हुआ है। इस प्रकार के आयोजन युवाओं में प्रेरणा का संचार करते है इसलिए ऐसे सम्मेलन लगातार होने चाहिए। भाजपा नेता स्वरूप सिंह खारा ने कहा कि इस आयोजन में युवाओं के उत्साह को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। युवा शक्ति समाज का गौरव है। आपको जहां भी जिस भी प्रकार के सहयोग की आवश्यकता हो, उसके लिए मैं सदैव उपलब्ध हूं। कांग्रेस के प्रदेश सचिव आजाद सिंह शिवकर ने कहा कि हमारा बाड़मेर यहां के लोगो के अपनत्व और उनके स्नेहिल स्वभाव के कारण जाना जाता है। यहां के अपनेपन और प्रेम की सभी मिसाल देते हैं। हम सब के हृदय में ये स्नेह और अपनापन बना रहे और ऐसे आयोजनों के माध्यम से प्रकट होता रहे, इसके लिए हमें सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ सक्रिय रहना पड़ेगा। भाजपा नेता महावीर सिंह चूली ने सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव के बारे में बताते हुए युवाओं से आग्रह किया कि अपने अमूल्य समय का सही उपयोग करें और मोबाइल का उतना ही उपयोग करें जितनी वास्तव में आवश्यकता हो। गंगा सिंह काठाडी ने भी कहा कि सोशल मीडिया पर कुछ भी लिखने या शेयर करने से पहले उसकी सत्यता की जांच पड़ताल कर लेनी चाहिए। राजनैतिक मतभेदों को आपसी वैमनस्य में नहीं बदलने देना चाहिए। प्रगतिशील किसान विक्रम सिंह तारातरा ने कहा कि हम जिस भी पद पर हों, हमें सरल-सहज बने रहते हुए गरीब और पीड़ित के सहयोगी की भूमिका निभानी है। हम अपने पूर्वजों की भांति निष्पक्ष होकर न्याय का साथ दें, यह हमारा कर्त्तव्य है। भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश सचिव जितेंद्र सिंह बुडकिया ने कहा कि हमारे शिक्षको का मार्गदर्शन ही हमें जीवन में आगे बढ़ाता है। उनके द्वारा सिखाए गए अनुशासन का जीवन निर्माण में बड़ा महत्व रहता है। राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयनित कर्मवीर सिंह उण्डखा और शीशपाल सिंह सोढा ने युवाओं से अपने लक्ष्य पर डटे रहने की बात कही। नीलम कंवर बिशाला ने विकसित भारत और राजपूत विषय पर अपनी बात रखी। दिल्ली में हुई गणतंत्र दिवस परेड में हिस्सा लेने वाली पूनम कंवर झिनझिनयाली ने कहा कि नारी शक्ति के संवर्धन की आज आवश्यकता है। समाज से आग्रह है कि बेटियो को खूब प्रोत्साहित करें और उनके आगे बढ़ने में सहयोगी बनें। स्वागत भाषण आयोजन समिति के प्रवीण सिंह मीठडी द्वारा दिया गया। विजय सिंह तारातरा ने सभी का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन जगदीश राजपुरोहित ने किया। कार्यक्रम के आयोजन में पवनसिंह महेचा बाड़मेर आगौर का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में जोगेंद्र सिंह चौहान, हरिसिंह राठौड, शेरसिंह भुरटीया, पाबुदान चारण, महेन्द्रसिंह तारातरा, अनोपसिंह भाटी, नेपालसिंह तिबनियार, पेपसिंह पार्षद, मुलतानसिंह महाबार, उगमसिंह बिशाला, छुगसिंह गिराब, महिपालसिंह आगौर, महेन्द्रसिंह चूली, सवाईसिंह मारुडी, युवराजसिंह कुरला, हिन्दुसिंह तामलोर, श्यामसिंह जसाई, कल्याणसिंह चूली, समुन्द्रसिंह देदुसर, रघुवीरसिंह तामलोर, युवराजसिंह आटी, हाथीसिंह गिराब, मदनसिंह चूली, वी पी सिंह आगौर, रतनसिह, सवाईसिंह चूली, पूरसिंह चाडियाली, देवीसिंह बलाई, कल्याणसिंह चूली, गजेन्द्रसिंह खारा, नारायणसिंह इंद्रोई सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

समारोह पूर्वक मनाई राव देवराज राठौड़ की 662वीं जयंती

जोधपुर जिले में सेतरावा के बावकान तालाब पर स्थित श्री देवराज स्मारक पर 26 फरवरी को राव देवराज राठौड़ की 662वीं जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई जिसमें देवराज राठौड़ समाज के पुराने 24 गांवों के साथ ही इंदावटी, गोगादेव क्षेत्र से भी समाजबंधु उपस्थित रहे। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ-साथ युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ना भी आवश्यक है। युवा शक्ति के सही दिशा में चलने पर ही समाज और राष्ट्र भी सही दिशा में चलेंगे। उन्होंने युवाओं से देवराज जी के चरित्र को आत्मसात करने का आह्वान करते हुए उनके स्मारक पर आधुनिक सुविधाओं से युक्त डिजिटल लाइब्रेरी खुलवाने में सहयोग करने की भी बात कही। शेरगढ़ विधायक बाबूसिंह राठौड़ ने कहा कि राव देवराज राठौड़ स्मारक के विकास का दायित्व हम सब का है और इसके लिए हम सबको मिलकर प्रयास करने चाहिए। प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य उम्मेद सिंह राठौड़ ने राव देवराज राठौड़ व गोगा देव राठौड़ के पैनोरमा के शीघ्र निर्माण की मांग रखी। पोकरण विधायक महंत प्रताप पुरी, आरएसएस के क्षेत्रिय प्रचारक निंबाराम, मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा और देवराज हितकारिणी सभा अध्यक्ष मोती सिंह राठौड़ चौरडिया ने भी अपने विचार रखे और समाज को आगे बढ़ाने के लिए संगठित होकर रहने और कुरीतियों से दूर रहने की बात कही। समारोह के दौरान शिक्षा व खेल के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले समाज के 116 छात्र-छात्राओं को भी सम्मानित किया गया। मदन सिंह सोलंकिया तला द्वारा रचित पुस्तक 'परिणी या कवारी' का विमोचन भी कार्यक्रम के दौरान किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक भी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। आयोजन व्यवस्था ढेलाना ग्रामवासियों द्वारा की गई।

श्री भवानी निकेतन ने मनाया 83वां स्थापना दिवस

श्री भवानी निकेतन संस्थान ने अपना 83वाँ स्थापना दिवस समारोह 14 फरवरी को बसन्त पंचमी के दिन मनाया। संस्था के पूर्व छात्र वरिष्ठ चेस्ट रोग विशेषज्ञ डॉ. रामबाबू गुप्ता के मुख्य आतिथ्य में संपन्न कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री भवानी निकेतन शिक्षा समिति के अध्यक्ष शिवपाल सिंह नांगल ने कहा कि जिस उद्देश्य एवं दूरदृष्टि से समाज द्वारा भवानी निकेतन की स्थापना की गई है, संस्था उस पर खरी उतर रही है। संस्था द्वारा वर्तमान में 11 शिक्षण संस्थाएँ सफलतापूर्वक संचालित की जा रही है तथा सत्र 2024-25 से सैनिक स्कूल के रूप में नई शिक्षण संस्था का शुभारम्भ किया जा रहा है। समारोह में संस्था के पूर्व छात्र रहे विक्रम सिंह राठौड़ (इंस्पेक्टर, प्रवर्तन शाखा), डॉ. दिग्पाल सिंह (निदेशक अर्चना चाइल्ड हॉस्पिटल), राजेश चौधरी (ए.ई.एन.) एवं अन्तर्राष्ट्रीय कबड्डी खिलाड़ी सुमित्रा शर्मा को स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संस्था के प्रतिभावान एवं आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति भी संस्था द्वारा वितरित की गई। समारोह के अन्त में संस्था के सचिव गुलाब सिंह मेड़तिया ने सभी को बसन्त पंचमी की शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए आगन्तुकों का आभार ज्ञापित किया। उल्लेखनीय है कि समाज में शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाली अग्रणी संस्था के रूप में श्री भवानी निकेतन की स्थापना 1942 में बसन्त पंचमी के दिन जयपुर के तत्कालीन महाराजा सवाई मानसिंह जी द्वितीय द्वारा की गई थी।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org